

भारत की ऊर्जा रणनीति में प्रतिबद्धताओं का संतुलन होता है : पुरी



नवी दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री हरदीप सिंह पुरी ने बुधवार को कहा कि भारत की ऊर्जा रणनीति में साझा वैश्विक हितों और हरित संकरण के प्रति प्रतिबद्धताओं, सभी की तर्फ़ ऊर्जा की उपलब्धता, सुआसिक दाम और देश की ऊर्जा सुरक्षा पर उचित व्यापर खो जाता है। श्री पुरी ने अमेरिका में पेट्रोलियम उद्योग के गढ़ हैरून में ह्याभारत-अमेरिका रणनीतिक साझेदारी में अवसर पर एक गोलमेज सम्मेलन को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि अगले दो दशकों में वैश्विक ऊर्जा मांग में बढ़िया का 25 प्रतिशत भारत से आने वाला है। उन्होंने कहा कि भारत ने कम कार्बन ड्रॉप करना उठाया है, जिसमें हाइड्रोजन और जैव इंधन जैसे उभरते इंधन शामिल हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया

तक की केके लाख वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में खोज और उत्पादन को युक्तिगत बनाए और प्रोस्थिति करने के लिए बड़े सुधार कर रहा है। उन्होंने कहा कि इससे विशेष क्षेत्रों में श्री पुरी की माध्यम से अच्छी युग्मता बातें भूवैज्ञानिक डेटा उपलब्ध हो सकती हैं। श्री पुरी ने एक के बाद एक कई ट्रॉफी के जरिए कहा कि जैव इंधन, गैस आधारित अर्थव्यवस्था, हरित हाइड्रोजन, पेट्रोकेमिकल्स और अपस्ट्रीम क्षेत्रों के क्षेत्रों में दोनों देशों के बीच अपार संभावनाएँ स्पष्ट हैं। और इसे क्षेत्र की कंपनियों के सहयोग से आगे बढ़ावा जा रहा है। उन्होंने कहा कि भारत देश सरकार के सुधार उपरांत के कारण, वैश्विक तेल कंपनियों द्वारा भारतीय ईंडिया में अधिक पर्याप्ति दिख रही है। पेट्रोलियम मंत्रालय के एक बयान में कहा गया है कि अन्वेषण और ऊर्जाकी क्षेत्रों को 99 प्रतिशत

सम्पादक की कलम से...

आपकी योजना व आपकी सट्टाएँ

राज्य के मुख्यमंत्री हमें सोरन हर गाव-पचायत को कल्पाणकारी योजनाओं से आच्छादित करने के लक्ष्य के साथ आगे बढ़ चुके हैं। नया और सशक्त झारखण्ड बनाने के संकल्प को विशाल रूप देने के उद्देश्य से इनका प्रयास सराहनीय है। राज्यवासियों के विकास और खुशहाली के लिए आपकी योजना-आपकी सरकार-आपके द्वार कार्यक्रम को लेकर राज्य में चर्चाओं का बाजार गर्म है। अब देखना है इस योजना को धरातल पर कैसे उतारा जाता है। इसके लिए प्रत्येक जिले के अधिकारियां की भागीदारी महत्वपूर्ण होने जा रही है। बुधवार को मुख्यमंत्री ने सवित्रीबाई फूले किशोरी समृद्धि योजना का शुभारंभ कर दबी कुचली बेटियों को सम्मान देने का कार्य किया गया है। अब जरूरत है इसे जमीन पर उतारने की। इस दूसरे चरण की निगरानी पोर्टल के माध्यम से करने की योजना है। इस पोर्टल पर हर जिले के पंचायतों में लगनेवाले शिविर की जानकारी हर दिन अपलोड होगी और हर सप्ताह में इसकी समीक्षा की जायेगी। इसके लिए शिविर में मिले आवेदनों व उसके निष्पादन की समीक्षा आवश्यक है। पहले चरण में पिछले वर्ष आयोजित सरकार आपके द्वार कार्यक्रम के तहत छह हजार पंचायतों में विशेष शिविर लगाकर लोगों को योजनाओं से जोड़ा गया था, इसमें समस्याओं को लेकर जितने आवेदन मिले हैं उसका 99 प्रतिशत का कागजी तौर पर समाधान मानती है सरकार। लेकिन ऐसी बात नहीं है। हाल के दिनों में कई ऐसी शिकायतें मिली हैं जिसमें लोग आज भी मुकाबलाल में जल्दी दिग्वलाई

20 21-22 में भारत से वस्तु एवं सेवा निर्यात 67,500 करोड़ अमेरिकी डॉलर का रहा है। जिसे 2030 तक 2 लाख करोड़ अमेरिकी डॉलर तक ले जाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसके लिए विभिन्न देशों से मुक्त व्यापार समझौते सम्पन्न किये जा रहे हैं। ऐसा कहा जाता है कि अर्थशास्त्र एक जटिल विषय है। जिस प्रकार शरीर की विभिन्न नसें, एक दूसरे से जुड़ी होकर पूरे शरीर में फैली होती हैं और एक दूसरे को प्रभावित करती रहती हैं, उसी प्रकार अर्थव्यवस्था के विभिन्न पहलू (रुपए की कीमत, ब्याज दरें, मुद्रा स्फीति, बेरोजगारी, आर्थिक असमानता, वित्त की व्यवस्था, विदेशी ऋण, विदेशी निवेश, वित्तीय घाटा, व्यापार घाटा, सकल घरेलू उत्पाद, विदेशी व्यापार, आदि) भी आपस में जुड़े होते हैं और पूरी अर्थव्यवस्था एवं एक दूसरे को प्रभावित करते रहते हैं। विषय की

इस जटिलता के चलते अक्सर कई व्यक्ति अर्थव्यवस्था सम्बंधी अपनी राय प्रकट करने में गलती कर जाते हैं। जैसे, केंद्र सरकार द्वारा प्रस्तुत किये जाने वाले आम बजट पर विपक्षी नेताओं द्वारा अक्सर यह टिप्पणी की जाती है कि इस बजट में तो आंकड़ों की जादूगरी की गई है और वित्त मंत्री तो आंकड़ों के बाजीगर हैं। दूसरे, अर्थसास्त्र की जटिलता के चलते ही देश के कई नागरिक भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रगति को कमतर आंकते हैं। वैसे, अर्थसास्त्र के बारे में एक और बात कही जाती है कि कुछ अर्थसास्त्री, आधी अधूरी (हाफ कुकड़/बेकड) जानकारी के आधार पर जितना बताते हैं उससे कहीं अधिक छुपाते भी हैं। अर्थव्यवस्था के कुछ पहलू तो ऐसे भी हैं जो देश के एक वर्ग को यदि फायदा पहुंचाते हैं तो एक अन्य वर्ग को नुकसान पहुंचाते नजर आते हैं, जैसे, व्याज की दर। व्याज दर में यदि वृद्धि की जाती है तो

कों के जमाकर्ता तो प्रसन्न होते हैं योंकि उनकी ब्याज की आय में द्विगुणी है परंतु उन्हें ब्याज के लाभ नाराज होते हैं क्योंकि उन्हें ब्याज के अप में अधिक राशि का भुगतान करना होता है। मुद्रा स्फीति को निर्धारित करने के लिए ब्याज की दरों को अक्सर बढ़ाया अथवा दाटा जाता है। इससे देश के नागरिकों का एक वर्ग प्रसन्न होता तो एक दूसरा वर्ग नाराज होता है, जबकि केंद्र सरकार एवं बैंकों को देश और अर्थव्यवस्था के हित में ध्यान में रखकर ही इस प्रकार नियंत्रण करने होते हैं। इसी प्रकार क और उदाहरण दिया जा सकता कि वैश्विक स्तर पर जब अमेरिकी डॉलर महंगा होकर रुपए कीमत कम होती है तो ऐसे में नियंत्रक तो प्रसन्न होते हैं परंतु आयातक नाराज होते हैं क्योंकि आयातक को अमेरिकी डॉलर अपरीदने के लिए अधिक रुपयों का भुगतान करना होता है और

सही हो। न कि, केवल चूंकि आलोचना करनी है इसलिए इन आंकड़ों को अपने तर्कों के फायदे के लिए इस्तेमाल किया जाये। भारत सरकार के वित्त मंत्रालय, भारतीय रिजर्व बैंक, भारतीय स्टेट बैंक, सीएमआई, विश्व बैंक, आईएमएफ, एडीबी, विश्व व्यापार संगठन, आदि संस्थानों के बेब साइट्स से इस संदर्भ में सही आंकड़े लिए जा सकते हैं। भारत में अभी हाल ही में कई क्षेत्रों में अतुलनीय विकास हुआ है। परंतु, इसकी पर्याप्त चर्चा देश में होती नहीं दिखती है, जबकि नागरिकों को भी पूर्णतः यह जानने का हक है। भारत आज विश्व की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है और जिस गति से भारत का अर्थिक विकास हो रहा है इसे देखते हुए वर्ष 2030 तक भारत, अमेरिका एवं चीन के बाद, विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जायेगा।

■ प्रह्लाद सबनानी

द्वाखाना बनाम शराबखाना

म दो दोस्त साझेदारी में खरीदी गई जमीन दान करना चाहते थे। मैंने अपने दोस्त से कहा - यदि रोगियों को इलाज के लिए दवाखाना न मिला तो रोगी पीड़ा से कराह उठेंगे। उसने कहा - यदि शराबखाना खोलने के लिए जगह न मिली तो लोग वैसे भी मर जायेंगे। इसलिए जगह तो उसी के लिए दो जानी चाहिए। मैं कुछ कहता मित्र आगे कहने लगा - जिद छोड़िये। हमारे घरेलू नुस्खे कई बीमारियों के इलाज वर बैठे कर सकते हैं, लेकिन जो न दिखाई देने वाली पीड़ा है उसका द्रलाज तो एक ही स्थान पर हो सकता है। और वह है शराबखाना। सोचकर तो देखो शराबखाना समाज के मिलने जुलने की सही जगह। वहाँ पीड़ा तो मिटेंगी ही साथ सभी तरह के लोगों से जिंदगी के तजुर्बे सीखने को मिलेंगे जो कि आईआईटी-आईआईएम भी नहीं सिखते। मैंने कहा - यह सब तो ठीक है। लेकिन शराबखाना अनेक वालों में कौन अच्छा है और कौन बुरा इसकी पहचान कैसे की जायेगी। अच्छे-बुरे लोगों की परिभाषा भी ताँ होती है। या यूँही जिससे मुँह लगाया वही अच्छा आदमी हो गया। कम से कम इस मामले में अस्तालत तो सही है। यहाँ बेस्टर पर पड़ा आदमी कुछ भी बोल सकता है लेकिन ज़ारी करतई नहीं। उसने कहा, 'भाई मेरे मैं कई शराबखानों में गया हूँ। वहाँ जो आता है बड़ी सच्चाई और ईमानदारी से आता है। वह घर में रुपए-पैसे देना भूल

सकता है या चुरा सकता है लेकिन शराबखाने में उसकी जितनी ईमानदारी और सच्चाई कहीं ओर देखने को नहीं मिलेगी। पैसा देकर शराब खरीदेगा और मिल बैठकर यारों के साथ पायेगा। अपने दुखों को साझा कर मन हल्का करेगा।' तो क्या अस्पताल में मन हल्का नहीं होता। क्या अपने दुख-सुख नहीं बाँट सकते। वहाँ तो ऐसा करने से किसी ने मना तो नहीं किया है न। उल्टे डॉक्टर खुद कहते हैं कि जो भी कहो खुल के कहो। वहाँ जितना सुना जाता है, भला कहीं ओर होता है? इसलिए फिर से सोचकर देख लो शराबखाने की जगह दवाखाना ही ठीक रहेगा। - मैंने कहा। शराबखाना शराबखाना होता है। जैसा नाम वैसा काम। वह धर्म, जात-पात, लिंग, भाषा, प्रांत, ऊँच-नीच का अंतर नहीं करता। सभी को एक समान दृष्टि से देखता है। वहाँ ऐसी पीड़ितों का भी इलाज हो जाता है जो दवाखाना जाने पर भी नहीं होता। दवाखाना ऊँचे लोगों के लिए अलग तो नीचे तबके लिए अलग होते हैं। सरकारी दवाखाना होगा तो उपचार भी सरकार की तरह ही बेकार होगा। निजी दवाखाना तो बढ़िया होता है, लेकिन इन्हाँ महंगे में भर्ती कौन होगा। जेब में पैसा होगा तभी तो लोग यहाँ आ पायेंगे।'- मित्र ने कहा।

■ डा. सुरेश कुमार मिश्रा 'उत्तम'
मो. नं. 73 8657 8657

सड़क हादसे व चुनाविया

की बढ़ती संख्या ने यह सोचने पर विवश किया है कि क्या विकास की धुरी मानी जानी चाली सड़कें मौत का प्रमुख कारण और जगह बननी जा रही हैं? जिस सड़क से सारा यातायात संचालित होता है, क्या वे जीवन छीनने का कारण बननी जा रही हैं? सड़कें अर्थव्यवस्था की वृद्धि की आधार हैं, तो क्या सड़कों पर हो रही मौतें अर्थव्यवस्था को नुकसान नहीं पहुंचा रही हैं? पेंछले कुछ सालों में केंद्रीय सड़क और राजमार्ग में त्रालय ने सड़क सुरक्षा संबंधी कई उपाय किये हैं। उनमें सुरक्षित बुनियादी ढांचे को प्रोत्साहित करना, जगरूकता पैदा करना, सुरक्षा कानूनों का प्रवर्तन, सड़क सुरक्षा सूचना का डेटाबेस तैयार करना जैसे उपाय शामिल हैं। इसके कुछ सकारात्मक परिणाम देखने को मिले हैं। मगर बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं ने इन सारे उपायों पर असवालिया निशन लगा दिए हैं। वजह है कि इन उपायों का पालन ठीक से नहीं कराया जा रहा है। कठोर कानून के बावजूद लोगों को उसका भय नहीं सताता, जिसका परिणाम प्रतिदिन सैकड़ों सड़क हादसों के रूप में सामने आता है। सड़क दुर्घटनाओं को कम करने के मकसद से 2019 में रफ़तार वाहन अधिनियम को बेहद कठोर बना दिया गया। साथ ही, वाहन सुरक्षा के लिए नये तकनीकी सामनक भी लाग किये गये। इसके बावजूद यातायात नेयमों का संरेख्य उल्लंघन किया जाता है। सड़क दुर्घटनाओं में दुपहिया वाहनों की हिस्सेदारी सबसे अधिक है। देखा गया है कि गड़े चाली और टूटी-फूटी सड़कों पर लापरवाही या जानबूझ कर गलत तरीके से वाहन चलाने से हुई दुर्घटनाओं से कोई सबक नहीं लेता। शहरों में लालचती पार करने, अधिक रफ़तार से गाड़ी चलाने और आगे निकलने की प्रवृत्ति आम है। यह दुर्घटनाओं को घायल होते और मरते हैं की लापरवाही कम जिम्मेदार होने के बाद घायल को तु हुई देरी घायल व्यक्ति की मगर आम लोग घायल नहीं आते। राज्य सरकार को तत्काल चिकित्सा 3 सुविधाएं भारत में बहुत कई असमय हैं के अनुसार दुपहिया वाहनों ने वाले पचहत्तर फीस नहीं करते। अपने देश एक बड़ा कारण गुणवत्ता बेहद कमी भी है। आंखें दुर्घटनाओं के कारण हो जिम्मेदार होते हैं। विडंबंड जो सुझाव सड़क दुर्घटनाएं यातायात विशेषज्ञों द्वारा मुस्तैदी के साथ पालन के पुलिस कुछ दिन तो काम थीरे फिर वही पुराना ढांचा वरना क्या कारण है कि 2010 से सड़क हादसे होते हैं? मंत्री नितिन गडकरी ने कही की खास वजह तेज रफ़तार सड़क नियमों का पालन किया जाता है। 2010 में संयुक्त राष्ट्र 2020 के दशक को 'स्कॉल का दशक' घोषित किया गया था। इसके देशों में तो हुआ, लेकिन दिखाई नहीं दिया। पिछले दुर्घटनाएं कम होने के बाद

इसमें यातायात पुलिस द्वारा नहीं है। वहीं हादसा घटायरंत अस्पताल पहुँचने में मौत का बड़ा कारण है, व्यक्ति की मदद के लिए रक्कार की तरफ से घायल होने पर राहत पहुँचने वाली कम है। इसमें भी घायल हो जाती है। एक सर्वेक्षण में पर सुर्खेतना का शिकार दो लोग हेलमेट का प्रयोग में सड़क दुर्घटनाओं का अपूर्ण ड्राइविंग स्कूलों की नड़ बताते हैं कि सड़क ने वाली अस्पती फीसद चालक प्रत्यक्ष रूप से बना ही कही जायेगी कि नाओं से बचने के लिए दिये जाते रहे हैं उन्हें कराने के लिए यातायात करती है, लेकिन धीरे-रर कायम हो जाता है। भारत में ही सबसे अधिक हाल में केंद्रीय राजमार्ग पर हा कि सड़क दुर्घटनाओं नार से गाड़ी चलाना और न करना है। गौरतलब है कि द्र महासभा ने 2011 से सड़क सुरक्षा पर सहमति था। उसका असर दुनिया के भारत में कोई असर नहीं मौतों में 29.16 फीसद प्रति वर्ष की दर से घट्ठिक हो रही है। वे आंकड़े सरकारी हैं। गैर-सरकारी आंकड़ों में भी आंकड़ों में व्यादा है। आंकड़े के मुताबिक दुनिया में बारह लाख से ज्यादा लोग सड़क हादसों में मारे जाते हैं। जबकि इसमें पांच गुना से अधिक लोग गंभीर रूप से घायल होते हैं, जिनमें ज्यादातर अपंग हो जाते हैं। इनमें युवाओं की तादात तीन चौथाई से ज्यादा है। विश्व के कुल वाहनों का महज दो फीसद भारत में है, पर सड़क हादसों में होने वाली मौतों वारं फीसद से ज्यादा है। दुनिया के तमाम देशों ने अपने कड़े सड़क कानून और जनजागरूकता अभियानों के जरिये सड़क हादसों में बढ़ नहीं होने दी, लेकिन पिछले बीस सालों में सड़क दुर्घटनाओं की वजह से भारत में पचहतर फीसद से ज्यादा की वृद्धि हो चुकी है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि भारत में कितना सड़क कानूनों का पालन किया और कराया जाता है। सड़क सुरक्षा पर जारी की गई विश्व स्थिति रिपोर्ट ने सड़क दुर्घटनाओं के बढ़ते मामले की मुख्य पांच वजहें बताई हैं। इनमें सीमा से ज्यादा तेज गाड़ी चलाना, नशे में गाड़ी चलाना, सुरक्षा पेटी न बांधना, दुपहिया चलाते वक्त हेलमेट न पहनना और बच्चों की सुरक्षा के उपायों की अनदेखी शामिल है। गौरतलब है कि जिस रफ्तार से विकास का का आधार मानी जाने वाली सड़कों का निर्माण हो रहा है, उस अनुपात में सड़क सुरक्षा के उपाय न होने की वजह से सड़क दुर्घटनाएं बढ़ रही हैं। यह भी सच है कि वाहन चालक सड़क यातायात नियमों का पालन भी नहीं करते।

— ३०५ —

संपादक के नाम पाठकों की पाती सही शब्द का प्रयोग करें

जिसका जलवा कायम है, उसका नाम मूलायम है...

ली का प्रयोग
एक भी वाक्य
ज गलियों में
कैसे परिवार
में भी बेड़क
है। इस बारे
यारी जुबान ही
बेक समावार
नी करें। ना ही
जोना पड़ता है।
यहाँ पर कई
लियों के प्रयोग
जा रहा है।
आम बातीत
कर अपने को

आ समान में हेलीकॉप्टर की आवाज व बच्चों के दौड़े
की एक मिश्रित आवाज सुनाई देने का मतलब था
हेलीकॉप्टर उत्तर रहा है, तो घर के पीछे वाली खिड़की पर
खड़ा हो जाया करता था। कुछ देर में हेलीकॉप्टर उत्तर
उड़ती, परंतु थमते फिर पायलट उत्तरकर दरवाजा खोला
सामने से मुलायम सिंह यादव जी कदम जमीन पर पड़ते
से नारों का शोर सुनाई देने लगता 'जिसका जलवा कायम
नाम मुलायम है'। मेरा जन्म और प्रारंभिक शिक्षा दोनों
इटावा में हुईं, मेरा घर कानपुर विश्वविद्यालय के एक
महाविद्यालय के साथ अपनी बाढ़ियां साझा करता था। उसके
आस पास के सभी मैदानों से बढ़ा और सुरक्षा दृष्टि से भी
इसलिए वह नेताओं के हेलीकॉप्टर का स्थायी हैलीपेड़ भी
नेताओं का तो आगमन अक्सर चुनाव के समय ही होता था।
उत्तर प्रदेश के 'नेताजी' और इटावा के लिए 'धरती पुत्र'
सिंह यादव जी का तो गृह क्षेत्र ही था, वो यहाँ के रेगुलर
या यूं कहें कि परमानेट विजिटर थे। नेताजी के इटावा

हुए शोर कि अब पहुँचकर रता, धूल लता और और जोर है, उसका ही जिला प्रतिष्ठित का मैदान का फिट है। अन्यथा लेकिन 'मुलायम विजिटर' आने के का सूत्र था। कभी-कभी तो पहले से भनक भी नहीं लगती कि अचानक से सफेद एंबेस्डर कार का काफिला सड़क से गुज़ारने के बैकै कैट कमांडो को देखकर लोग अंदाजा लगा लेते कि जा रहे हैं। पता पड़ता कि नेताजी सफैई आए थे उन्हें अपलाने के दिवंगत हो जाने या बीमार होने का पता चला तो पढ़े। जब कोई संकोच के कारण नेताजी को आमंत्रित नहीं तो कई शादियों, जन्मदिनों में तो नेताजी बिना बुलाये पहुँचकर से डाँटते थे कि मुझे बुलाया क्यों नहीं? नेताजी जब लखनऊ तो और कोई उनके पास काम लेकर जाता तो वे अनेकों का नाम लेकर उस गाँव के और आसपास के हालचाल ले लें। ऐसे थे नेताजी... नेताजी सड़क चलते कभी भी रुककर लोगे का माहाल पूछ लेते थे, यही उनका ओपिनियन पोल होता नेताजी के पास कोई भी काम लेकर जाता, वे कभी उसे निराकार करते थे। तुरंत सचिव को बुलाकर कहते थे कि नियम नहीं क्या हुआ? नियम कौन बनाता है? तो नियम बनाओ और दें करो। जैसा कि राष्ट्रीय कवि डॉ. कुमार विश्वास कहते

था। नेताजी कई बार किसी रिपोर्टर, कवि इत्यादि से नाराज भी हो जाते थे तो अगले दिन फोन लगाकर अधिकार भाव के क्षमा माँगते। लेखकों, साहित्यकारों को नेताजी ने बहुत प्रोत्साहित करने का काम किया। हम बच्चे जब हेलीकॉप्टर देखने वाली उम्र को पार किये तो मुलायम सिंह जी के बारे में जानना, समझना चाहते थे, इसलिए अपने बड़ों से अक्सर उनके बारे में पूछा करते। मेरा ननिहाल तो सैफ़र्ड के और करीब है। नानी बताती हैं कि जिन दिनों समाजवादी आंदोलन अपने चरम पर था नेताजी साइकिल चलाकर गांव में पर्चे बांटने आते थे, उन दिनों वे शिक्षक थे। मेरे बड़े नाना पहलवानी करते थे, तो नेताजी उनके अखाड़े के मित्र भी थे। नेताजी ने अपना पहला विधानसभा चुनाव जसवंतनगर से अभावों में लड़ा था, लोगों से पैसे माँगकर जीप ली, फिर चुनाव प्रचार किया। एक किसान से शिक्षक, पहलवान, विधायक, मुख्यमंत्री से लेकर देश के रक्षामंत्री तक का सफर नेताजी को एक 'संरथान' के रूप में खड़ा करता है। नेताजी का नाम तो मुलायम था, लेकिन अपने संकल्प के प्रति ढूँढ़ थे। जो बात एक बार ठान लेते थे, फिर उस पर अडिंग रहते थे, सिर्फ सत्ता को बचाये रखने की चाह में नेताजी ने समझी नहीं किये। नेताजी ने अपने विरोधियों को कभी दुश्मन नहीं माना, सबको गले लगाया लेकिन चनावी अखाड़े में अपने दांव से चित्त किया।

■ आयुष पाठ्य

जिसका जलवा कायम है, उसका नाम मूलायम है...

आ | समान में हेलीकॉप्टर की आवाज व बच्चों के दौड़ने की एक मिश्रित आवाज सुनाई देने का मतलब था हेलीकॉप्टर उत्तर रहा है, तो घर के पीछे वाली खिड़की पर खड़ा हो जाया करता था। कुछ देर में हेलीकॉप्टर उत्तर उड़ती, पंखे थमते फिर पायलट उत्तरकर दरवाजा खोला सामने से मुलायम सिंह यादव जी कदम जमीन पर पड़ते से नारों का शोर सुनाई देने लगता 'जिसका जलवा कायम नाम मुलायम है'। मेरा जन्म और प्रारंभिक शिक्षा दोनों इटावा में हुई, मेरा घर कानपुर विश्वविद्यालय के एक महाविद्यालय के साथ अपनी बाउंड्री साझा करता था। उस आस पास के सभी नेताओं से बड़ा और सुरक्षा दृष्टि से भी इसलिए वह नेताओं के हेलीकॉप्टर का स्थायी हेलीपेड भी नेताओं का तो आगमन अक्सर चुनाव के समय ही होता था। उत्तर प्रदेश के 'नेताजी' और इटावा के लिए 'धरती पुत्र' सिंह यादव जी का तो गृह क्षेत्र ही था, वो यहाँ के रेगुलर या याँ कहें कि परमानेट विजिटर थे। नेताजी के इटावा

हुए शोर कि अब पहुँचकर रता, धूल लता और और जोर है, उसका ही जिला प्रतिष्ठित का मैदान का फिट है। अन्यथा लेकिन 'मुलायम विजिटर' आने के का सूत्र था। कभी-कभी तो पहले से भनक भी नहीं लगती कि अचानक से सफेद एंबेस्टडर कार का काफिला सड़क से गुज़ारने के बैकै कैट कमांडो को देखकर लोग अंदाजा लगा लेते कि जा रहे हैं। पता पड़ता कि नेताजी सफैई आए थे उन्हें अफलाने के दिवंगत हो जाने या बीमार होने का पता चला तो पढ़े। जब कोई संकोच के कारण नेताजी को आमंत्रित नहीं तो कई शादियों, जन्मदिनों में तो नेताजी बिना बुलाये पहुँचकर से डाँटते थे कि मुझे बुलाया क्यों नहीं? नेताजी जब लखनऊ होते तो और कोई उनके पास काम लेकर जाता तो वे अनेकों का नाम लेकर उस गाँव के और आसपास के हालचाल ले लें। ऐसे थे नेताजी...नेताजी सड़क चलते कभी भी रुककर लोगे का माहाल पूछ लेते थे, यही उनका ओपिनियन पोल होता नेताजी के पास कोई भी काम लेकर जाता, वे कभी उसे निराकरण करते थे। तुरंत सचिव को बुलाकर कहते थे कि नियम नहीं क्या हुआ? नियम कौन बनाता है? तो नियम बनाओ और दें करो। जैसा कि राष्ट्रीय कवि डॉ. कुमार विश्वास कहते

था। नेताजी कई बार किसी रिपोर्टर, कवि इत्यादि से नाराज भी हो जाते थे तो अगले दिन फोन लगाकर अधिकार भाव के क्षमा माँगते। लेखकों, साहित्यकारों को नेताजी ने बहुत प्रोत्साहित करने का काम किया। हम बच्चे जब हेलीकॉप्टर देखने वाली उम्र को पार किये तो मुलायम सिंह जी के बारे में जानना, समझना चाहते थे, इसलिए अपने बड़ों से अक्सर उनके बारे में पूछा करते। मेरा निनाहाल तो सैफ़र्ड के और करीब है। नानी बताती हैं कि जिन दिनों समाजवादी आंदोलन अपने चरम पर था नेताजी साइकिल चलाकर गांव में पर्चे बांटने आते थे, उन दिनों वे शिक्षक थे। मेरे बड़े नाना पहलवानी करते थे, तो नेताजी उनके अखाड़े के मित्र भी थे। नेताजी ने अपना पहला विधानसभा चुनाव जसवंतनगर से अभावों में लड़ा था, लोगों से पैसे माँगकर जीप ली, फिर चुनाव प्रचार किया। एक किसान से शिक्षक, पहलवान, विधायक, मुख्यमंत्री से लेकर देश के रक्षामंत्री तक का सफर नेताजी को एक 'संरथान' के रूप में खड़ा करता है। नेताजी का नाम तो मुलायम था, लेकिन अपने संकल्प के प्रति ढूँढ़ थे। जो बात एक बार ठान लेते थे, फिर उस पर अडिंग रहते थे, सिर्फ सत्ता को बचाये रखने की चाह में नेताजी ने समझी नहीं किये। नेताजी ने अपने विरोधियों को कभी दुश्मन नहीं माना, सबको गले लगाया लेकिन चनावी अखाड़े में अपने दांव से चित्त किया।

■ आयुष पाठ्य

पढ़ा लिया साबित करने का काशकरत होलाकर गाला तो गाला हो। इनका कहने वे सुनील स हैं दूर रहना चाहिए और इसे सामाजिक बुराई मानकर इसे खत्म करना चाहिए।

■ महेश शर्मा, मेदिनीनगर

KASHYAP'S DENTAL CLINIC

Dr. Vaibhav Kashyap



Oral & Dental Surgeon, C.c. Endodontist & Implantologist Certified Orthodontist, MIDA



"Smiles & More"

छात्र-छात्राओं के लिए
50% की छूट

- ❖ आसीटी
- ❖ पायरिंग का ईलाज
- ❖ टेंडे-मेडे दाँतों का ईलाज
- ❖ स्मार्टल डिजाइन
- ❖ इनविजिवल क्लिप
- ❖ दंत रोपण
- ❖ फिक्स दाँत लगाना
- ❖ अत्याधुनिक मशीन और तकनीक के द्वारा ईलाज

Facilities

CHAMBER
SKYLINE - 4006, 4th Floor, Kadru, Opp. Dr. Lal's Hospital, Ranchi
Contact No. : 919533383, 7903835453
Time : 9 am to 2 pm & 4 pm to 8 pm
Sunday : 9 am to 2 pm
E-mail : vaibhav.kashyap2011@gmail.com

न्यूज गैलरी

स्पाइस जेट विमान के केबिन में भरा धुआं, हुई इमरजेंसी लैंडिंग

हैदराबाद (एजेंसी)। स्पाइस जेट के विमान की बुधवार रात हैदराबाद हवाई अडडे पर आपात स्थिति में लैंडिंग करारी। यह विमान गोवा से हैदराबाद आ रहा था। स्पाइस जेट के एक सीनियर अधिकारी ने बताया कि गोवा से हैदराबाद की स्पाइस जेट की राजीव गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अडडे पर इमरजेंसी लैंडिंग हुई। स्पाइस जेट के एकजी 375 विमान के पायरत ने विमान से धुआं निकलते रहे जिसके बाद तुरंत एयर ट्रैफिक कंट्रोलर (एटीसी) की सूचित किया। बता दें कि बुधवार की रात को एयरक्राफ्ट ने हैदराबाद हवाई अडडे पर इमरजेंसी लैंडिंग की। जनकारी के मुताबिक सभी यात्री सुरक्षित हैं। डीजीएसी की ओर से ये गवर्नरी के अनुसार विमान की सुरक्षित लैंडिंग के बाद विमान यात्रियों को आपातकालीन निकास द्वारा से बाहर निकाला गया। इस दौरान एक यात्री के पैर में हल्की स्क्रैच आ गयी। हैदराबाद एयरपोर्ट के अधिकारियों के मुताबिक व्यूएस 400 एयरक्राफ्ट वीटी-एसव्यूयों में 80 यात्री सवार थे। उक्त विमान की इमरजेंसी लैंडिंग के कारण बुधवार की नौ विमानों को डायर्वर्ट करना पड़ा। यह घटना रात के करीब 11 बजे की है।

छत्तीसगढ़ खनन मामले में ईडी ने आईएस अधिकारी समेत तीन को किया गिरफतार

रायपुर (एजेंसी)। प्रत्यन्त निवेदनलय (ईडी) ने आय से अधिक संपत्ति से संबंधित धन शोधन रोकथाम मामले में गुरुवार को छत्तीसगढ़ के आईएस समीकरित विमानों, इंद्रमणि समूह के सुनील अग्रवाल और फरार आरोपी सुर्यकात तिवारी के बाचा तस्वीकात तिवारी को गिरफतार किया। सुनील ने कहा कि आईएस रानु साह कथित तौर पर लापता थी और उसे ईडी के सामने पेश होना होगा। ईडी अधिकारियों ने बुधवार को विश्वासी रूप से खदानों से मिले 25 रुपये प्रति टन कायल के कथित कमीशन के संबंध में पूछताछ की। ईडी ने छत्तीसगढ़ में लगातार दो दिनों तक छापेमारी की ओर करीब बार करार रुपये दरमाद किये।

राष्ट्रपति ने त्रिपुरा में दो रेल सेवाओं को हरी झंडी दिखाकर किया रवाना



कहा कि अगरतला से जिरीबाम से मणिशुर के खोंगसांग तक जनशताव्दी एस्प्रेस ट्रेन सवाह में तीन बार सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को चलेगी। 110 किलोमीटर लंबी जिरीबाम-इंफाल नवी रेलवे जनाना के तहत इस खंड का नवार्पित निर्णय किया गया है।

दो कहा कि ट्रेन बात्रा (अगरतला से खोंगसांग) बात्रा का समय अधिक से भी कम होगा बिक्की बात्रा का समय लगभग 15 घंटे या सदक मार्ग से कवर करेगा। जन शताव्दी एस्प्रेस ट्रेन में यात्रियों के लिए नवीनतम सुविधाओं के साथ नए लिंक होने पर बुश कोह होंगे, उन्होंने कहा कि इस ट्रेन में एक ट्रेनडोम कोह भी भी सुख गया है ताकि बात्री बात्रा के दौरान पहाड़ी क्षेत्र के सुरक्षित रूपों को देख सकें। पारस्पर्य कार्य की खिलाफियों और छत्तीसगढ़ के कार्यकरण के कारण हुआ, जिसे फहले बस की नीचे लगा दिया गया था। सभी घायलों को निकट के अस्पताल में भर्ती कराया गया है। इस विस्फोट की जिम्मेदारी लेने का तत्काल कोई दावा नहीं किया गया है।

चंबा में बोले प्रधानमंत्री मोदी -

डबल इंजन की ताकत ने हिमाचल के विकास को तेजी से आगे बढ़ाया

शिमला (एजेंसी)। प्रधानमंत्री ने दोन्हों मोदी के लिए प्रदेश के दोनों के क्रम में गुरुवार को चंबा में 800 रुपये की जलविद्युत परियोजनाओं का शिलान्यास किया। प्रधानमंत्री मोदी ने 48 मेगावाट की चंजू-3 परियोजनों को जिरीबाम और 30.5 मेगावाट की देवथल-चंजू जल विद्युत परियोजना की आधारशिला रखी। हिमाचल के लिए लगभग तीन वर्षों के अंत में इन दो इंजनों की ताकत ने हिमाचल के विकास को डबल तेजी से आगे बढ़ाया :

पीएम मोदी ने कहा कि जब देश की आजादी के 100 साल होंगे तो हिमाचल भी अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूरे कर रहा होगा।

इसलिए आपने वाले 25 वर्षों का एक-एक दिन हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। भारत की आजादी का अमृतकाल वर्जिन की बातों को आगे बढ़ाएगी।

डबल इंजन की ताकत ने हिमाचल के विकास को डबल तेजी से आगे बढ़ाया :

पीएम मोदी ने कहा कि जब चंबा और चंबा के काम नहीं आती। आज हमने उस बात को बदल दिया। अब यहां का पानी भी काम आएगा और यहां की जानवारों भी जी जान से अपनी विकास की बातों को आगे बढ़ाएगी।

डबल इंजन की ताकत ने हिमाचल के विकास को डबल तेजी से आगे बढ़ाया :

पीएम मोदी ने कहा कि जब देश की आजादी के 100 साल होंगे तो हिमाचल भी अपनी स्थापना के 100 वर्ष पूरे कर रहा होगा।

इसलिए आपने वाले 25 वर्षों का एक-एक दिन हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। भारत की आजादी का अमृतकाल वर्जिन की बातों को आगे बढ़ाएगी।

डबल इंजन की ताकत ने हिमाचल के विकास को डबल तेजी से आगे बढ़ाया :

पीएम मोदी ने कहा कि जब चंबा और चंबा के काम नहीं आती। आज हमने उस बात को बदल दिया। अब यहां का पानी भी काम आएगा और यहां की जानवारों भी जी जान से अपनी विकास की बातों को आगे बढ़ाएगी।

डबल इंजन की ताकत ने हिमाचल के विकास को डबल तेजी से आगे बढ़ाया :

पीएम मोदी ने कहा कि जब चंबा और चंबा के काम नहीं आती। आज हमने उस बात को बदल दिया। अब यहां का पानी भी काम आएगा और यहां की जानवारों भी जी जान से अपनी विकास की बातों को आगे बढ़ाएगी।

डबल इंजन की ताकत ने हिमाचल के विकास को डबल तेजी से आगे बढ़ाया :

पीएम मोदी ने कहा कि जब चंबा और चंबा के काम नहीं आती। आज हमने उस बात को बदल दिया। अब यहां का पानी भी काम आएगा और यहां की जानवारों भी जी जान से अपनी विकास की बातों को आगे बढ़ाएगी।

डबल इंजन की ताकत ने हिमाचल के विकास को डबल तेजी से आगे बढ़ाया :

पीएम मोदी ने कहा कि जब चंबा और चंबा के काम नहीं आती। आज हमने उस बात को बदल दिया। अब यहां का पानी भी काम आएगा और यहां की जानवारों भी जी जान से अपनी विकास की बातों को आगे बढ़ाएगी।

डबल इंजन की ताकत ने हिमाचल के विकास को डबल तेजी से आगे बढ़ाया :

पीएम मोदी ने कहा कि जब चंबा और चंबा के काम नहीं आती। आज हमने उस बात को बदल दिया। अब यहां का पानी भी काम आएगा और यहां की जानवारों भी जी जान से अपनी विकास की बातों को आगे बढ़ाएगी।

डबल इंजन की ताकत ने हिमाचल के विकास को डबल तेजी से आगे बढ़ाया :

पीएम मोदी ने कहा कि जब चंबा और चंबा के काम नहीं आती। आज हमने उस बात को बदल दिया। अब यहां का पानी भी काम आएगा और यहां की जानवारों भी जी जान से अपनी विकास की बातों को आगे बढ़ाएगी।

डबल इंजन की ताकत ने हिमाचल के विकास को डबल तेजी से आगे बढ़ाया :

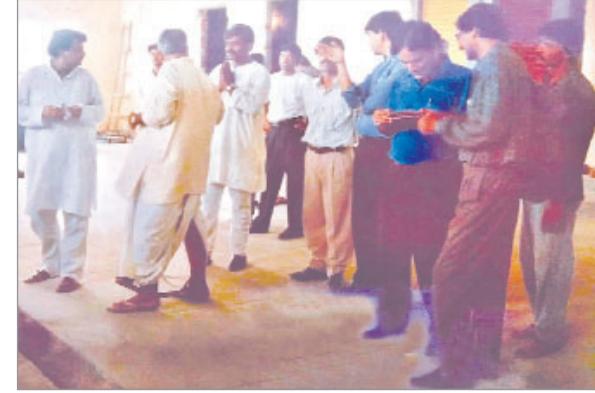
पीएम मोदी ने कहा कि जब चंबा और चंबा के काम नहीं आती। आज हमने उस बात को बदल दिया। अब यहां का पानी भी काम आएगा और यहां की जानवारों भी जी जान से अपनी विकास की बातों को आगे बढ़ाएगी।

डबल इंजन की ताकत ने हिमाचल के विकास को डबल तेजी से आगे बढ़ाया :

पीएम मोदी ने कहा कि जब चंबा और चंबा के काम नहीं आती। आज हमने उस बात को बदल दिया। अब यहां का पानी भी काम आएगा और यहां की जानवारों भी जी जान से अपनी विकास की बातों को आगे बढ़ाएगी।

डबल इंजन की ताकत ने हिमाचल के विकास को डबल तेजी से आगे बढ़ाया :

पीएम मोदी ने कहा कि जब चंबा और चंबा के काम नहीं आती। आज हमने उस बात को बदल दिया। अब यहां का पानी भी काम आएगा और यहां की जानवारों भी जी जान से अपनी विकास की बातों को आगे बढ़ाएगी।



कुछ यादे राष्ट्रीय नवीन मेल की

द. प्रकाश वाजपेयी से पहली

मुलाकात : साल 96 की आखिरी सर्वी से 97 की शुरूआती सर्वी के दिन थे। मैं 11 बजे राष्ट्रीय नवीन मेल के अॉफिस में पहुंच चुका था। कोई 12 से एक के बीच विनोद बंधु आते हैं। उनके साथ बड़ी बाही, औसत कद वाले एक व्यक्ति भी थे। उन्होंने हरा कोट पहन रखा था। बंधु जी ने मुझे अपने चैर्च में बुलाया और सामने बैठे अकिं से परिचय दिया। उनका नाम और इनकी लेखन शैली से बिहार के काफी लोग परिचित थे, उनमें भी था। फिर बंधु जी ने मेरे बारे में बताया कि मैं यहां जनल डेस्क का प्रभारी हूं। इसके बाद उन्होंने कुछ खास पूछा तो मैं अपनी एक रिपोर्ट उनकी ओर बढ़ा दी। बंधु जी ने इसे बेद जी को दे दिया और नजर डालने के लिए कहा। बेद जी ने रिपोर्ट पढ़ी और कहा कि पहले दो शब्द छोड़कर बाकी सही है। पहले दो शब्द को गलत कहने से मेरे लिए अजीब स्थिति हो गई। लगा कि संपादक जब पहली रिपोर्ट पर यह टिप्पणी कर दे तो अगे जाने क्या होगा। मेरी स्थिति देख उन्होंने कहा, 'यहां कार्यालय संवाददाता नहीं बल्कि प्रभात सुमन होना चाहिए।' उसके बाद रिपोर्टर अपनी खबर में हेडिंग नहीं लगाता था और कार्यालय संवाददाता ही खिलाकर देता था। बेद जी ने हेडिंग खबर को खिलाकर देता था। बेद जी से आखिरी बार अवृत्त 2001 में मुलाकात हुई। मैं उस वक्त अपर उजाला, जालांधर में था। डालटनगंज जाने ही सबसे पहले बेद जी से मिलने वाले मेल के अंदर मैं बैठे थे। बाबा को बहुत ही नहीं खबर देता था। इस दौरान वे वहीं रहने लगे थे। जब मुलाकात हुई तो वे कुछ ज्यादा ही कमज़ोर लग रहे थे। कुछ दिन पहले ही उनके सिर का अॉपरेशन किया गया। बेद जी ने कहा कि

हुआ था। उस समय उनके पैर में चोट लगी हुई थी। जब मैंने उनसे कहा कि ये क्या कर लिया है, सर। तो उनका जवाब था, 'अब कोई टोकने वाले भी तो नहीं हैं। आप जालांधर चले गए संजय रामचंद्र चला गया।' उनका मूठ कुछ ज्यादा ही उखड़ा या यूं कहे उड़िम लग रहा था। मुझे क्या पता था कि वह अखिरी मुलाकात है। मार्च 2000 में जब मैं



प्रधान संपादक सुरेश कुमार बजाज और रवि प्रकाश वाजपेयी

डालटनगंज आया तो मुझे गाल ब्लाडर में स्टोन का ऑपरेशन करना था। उस वक्त तक वे अपने भैया के यहां नवादा जा चुके होंगे। रामचंद्र जब मैं ऑपरेशन करा के लौटा आयोजित श्रद्धांजलि सभा में शहर के लोगों ने इन दोनों लेखों की खूब चर्चा की।

बेद जी का क्रिकेट प्रेम : मैंने राष्ट्रीय नवीन मेल में क्रिकेट की एक टीम बना रखी थी। बेद जी को चौथे, इस टीम के। 26 जनवरी 2000 को राष्ट्रीय नवीन मेल एकादश बनाम शेष पत्रकार एकादश का मैच था। इस मैच के पूर्व उन्होंने कहा कि वह मैच हमें जरूर जीतना है। सुमन जी अपर पर बड़ी जिम्मेदारी रहे थे। उनकी कही ही सत्तर सह हुई है। हमलोग बाबा को यहां करते हुए कभी बाल्कि मैंने काफी अच्छा खेल दियाया और मैं आपके द्वारा देखा गया।

- प्रभात मिश्रा

था। मैंने लिखा तो उनकी टिप्पणी थी 'कल आपके और मेरे लेख की सबसे ज्यादा चर्चा होगी।' हुआ भी ऐसा ही। ऑफिस में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में शहर के लोगों ने इन दोनों लेखों की खूब चर्चा की।

बेद जी का क्रिकेट प्रेम : मैंने राष्ट्रीय नवीन मेल में क्रिकेट की एक टीम बना रखी थी। बेद जी को चौथे, इस टीम के। 26 जनवरी 2000 को राष्ट्रीय नवीन मेल एकादश बनाम शेष पत्रकार एकादश का मैच था। इस मैच के पूर्व उन्होंने कहा कि वह मैच हमें जरूर जीतना है। सुमन जी अपर पर बड़ी जिम्मेदारी रहे थे। उनकी कही ही सत्तर सह हुई है। हमलोग बाबा को यहां करते हुए कभी बाल्कि मैंने काफी अच्छा खेल दियाया और मैं आपके द्वारा देखा गया।

- किन मुदों पर प्रमुखता

किया गया। यहां चला जा रहा है।

संस्थानों में संपादक, उप संपादक, व ब्लॉक की शुभिका नियां हैं। इसकी शुरूआत रामचंद्र सोडे द्वारा की जाता है। 28 साल में अनवरत प्रतिष्ठाता विश्वकर्मा पर श्वेतांग नवीन मेल ने कई रिपोर्ट प्रकाशित किया है। उनकी समस्याओं का आधार राष्ट्रीय नवीन मेल ही है। समय बदलता चला जा रहा है, लेकिन निष्पक्ष और पारदर्शी खबरों का आधार और माध्यम आज भी अखबार को ही माना जाता है। खबरों की अधिकृत और वास्तविक सूचना का आधार समाचार पत्र को ही माना जाता है। आज भी इस अखबार में प्रेरणायां और मोटिवेशन खबरों को यादी करता है। जिसपर राष्ट्रीय नवीन मेल खाता रहता है।

उनकी शुरूआत रामचंद्र सोडे द्वारा की जाता है।

संस्थानों में संपादक, उप संपादक, व ब्लॉक की शुभिका नियां हैं। इसकी शुरूआत रामचंद्र सोडे द्वारा की जाता है। 28 साल में अनवरत प्रतिष्ठाता विश्वकर्मा पर श्वेतांग नवीन मेल ने कई रिपोर्ट प्रकाशित किया है। उनकी समस्याओं का आधार राष्ट्रीय नवीन मेल ही है। समय बदलता चला जा रहा है, लेकिन निष्पक्ष और पारदर्शी खबरों का आधार और माध्यम आज भी अखबार को ही माना जाता है। खबरों की अधिकृत और वास्तविक सूचना का आधार समाचार पत्र को ही माना जाता है। आज भी इस अखबार में प्रेरणायां और मोटिवेशन खबरों को यादी करता है। जिसपर राष्ट्रीय नवीन मेल खाता रहता है।

उनकी शुरूआत रामचंद्र सोडे द्वारा की जाता है।

संस्थानों में संपादक, उप संपादक, व ब्लॉक की शुभिका नियां हैं। इसकी शुरूआत रामचंद्र सोडे द्वारा की जाता है। 28 साल में अनवरत प्रतिष्ठाता विश्वकर्मा पर श्वेतांग नवीन मेल ने कई रिपोर्ट प्रकाशित किया है। उनकी समस्याओं का आधार राष्ट्रीय नवीन मेल ही है। समय बदलता चला जा रहा है, लेकिन निष्पक्ष और पारदर्शी खबरों का आधार और माध्यम आज भी अखबार को ही माना जाता है। खबरों की अधिकृत और वास्तविक सूचना का आधार समाचार पत्र को ही माना जाता है। आज भी इस अखबार में प्रेरणायां और मोटिवेशन खबरों को यादी करता है। जिसपर राष्ट्रीय नवीन मेल खाता रहता है।

उनकी शुरूआत रामचंद्र सोडे द्वारा की जाता है।

संस्थानों में संपादक, उप संपादक, व ब्लॉक की शुभिका नियां हैं। इसकी शुरूआत रामचंद्र सोडे द्वारा की जाता है। 28 साल में अनवरत प्रतिष्ठाता विश्वकर्मा पर श्वेतांग नवीन मेल ने कई रिपोर्ट प्रकाशित किया है। उनकी समस्याओं का आधार राष्ट्रीय नवीन मेल ही है। समय बदलता चला जा रहा है, लेकिन निष्पक्ष और पारदर्शी खबरों का आधार और माध्यम आज भी अखबार को ही माना जाता है। खबरों की अधिकृत और वास्तविक सूचना का आधार समाचार पत्र को ही माना जाता है। आज भी इस अखबार में प्रेरणायां और मोटिवेशन खबरों को यादी करता है। जिसपर राष्ट्रीय नवीन मेल खाता रहता है।

उनकी शुरूआत रामचंद्र सोडे द्वारा की जाता है।

संस्थानों में संपादक, उप संपादक, व ब्लॉक की शुभिका नियां हैं। इसकी शुरूआत रामचंद्र सोडे द्वारा की जाता है। 28 साल में अनवरत प्रतिष्ठाता विश्वकर्मा पर श्वेतांग नवीन मेल ने कई रिपोर्ट प्रकाशित किया है। उनकी समस्याओं का आधार राष्ट्रीय नवीन मेल ही है। समय बदलता चला जा रहा है, लेकिन निष्पक्ष और पारदर्शी खबरों का आधार और माध्यम आज भी अखबार को ही माना जाता है। खबरों की अधिकृत और वास्तविक सूचना का आधार समाचार पत्र को ही माना जाता है। आज भी इस अखबार में प्रेरणायां और मोटिवेशन खबरों को यादी करता है। जिसपर राष्ट्रीय नवीन मेल खाता रहता है।

उनकी शुरूआत रामचंद्र सोडे द्वारा की जाता है।

संस्थानों में संपादक, उप संपादक, व ब्लॉक की शुभिका नियां हैं। इसकी शुरूआत रामचंद्र सोडे द्वारा की जाता है। 28 साल में अनवरत प्रतिष्ठाता विश्वकर्मा पर श्वेतांग नवीन मेल ने कई रिपोर्ट प्रकाशित किया है। उनकी समस्याओं का आधार राष्ट्रीय नवीन मेल ही है। समय बदलता चला जा रहा है, लेकिन निष्पक्ष और पारदर्शी खबरों का आधार और माध्यम आज भी अखबार को ही माना जाता है। खबरों की अधिकृत और वास्तविक सूचना का आधार समाचार पत्र को ही माना जाता है। आज भी इस अखबार में प्रेरणायां और मोटिवेशन खबरों को यादी करता है। जिसपर राष्ट्रीय नवीन मेल खाता रहता है।

उनकी शुरूआत रामचंद्र सोडे द्वारा की जाता है।

संस्थानों में संपादक, उप संपादक, व ब्लॉक की शुभिका नियां हैं। इसकी शुरूआत रामचंद्र सोडे द्वारा की जाता है। 28 साल में अनवरत प्रतिष्ठाता विश्वकर्मा पर श्वेतांग नवीन मेल ने कई रिपोर्ट प्रकाशित किया है। उनकी समस्याओं का आधार राष्ट्रीय नवीन मेल ही है। समय बदलता चला जा रहा है, लेकिन निष्पक्ष और पारदर्शी खबरों का आधार और माध्यम आज भी अखबार को ही माना जाता है। खबरों की अधिकृत और वास्तविक सूचना का आधार समाचार पत्र को ही माना जाता है। आज भी इस अखबार में